DEPARTMENT OF TELUGU

Date: 19/04/22

కథ

N. నాగదివ్య
BZC-II
H.T. NO: 20044012445166

కథ పేరు :- గోపి డప్పు

రాజాపురం గ్రామంలో గోపి అనే పిల్లవాడుండేవాడు అతడు వాళ్ళ నాయనమ్మతో పాటు ఉండేవాడు గోపి వాళ్ళ నాయనమ్మ ఎంతో కష్టపడి బతుకు వెళ్ళదీసేది.

ఒకరోజు నాయనమ్మ గోపితో "ఒరే పిల్లగా! నేను కట్టెలు అమ్మడానికి అంగడికి పోతున్నా వచ్చేటప్పుడు నీకేమైనా తేవాలా" అన్నది. గోపి నాయనమ్మతో.. "నాకేమి వద్దుగానీ బజారులో డప్పు దొరికితే తీసుకు రావా? డప్పు వాయించడమంటే నాకు చాలా ఇష్టం దానితో ఆడుకుంటా" అన్నాడు. నాయనమ్మ "సరే" అన్నది అంగడిలో కట్టెలు అమ్మినంక నాయనమ్మ ఒక బొమ్మల దుకాణంలోనికి పోయి "సేటూ! ఈ డప్పు ధర ఎంత?" అని అడిగింది "ఇరవై రెండు రూపాయలు" అన్నాడు దుకాణం వాడు కానీ నాయనమ్మ దగ్గర పదిహేను రూపాయలే ఉన్నాయి "అయ్యో మనవడి కోసం డప్పు కూడా కొనలేకపోతిని" అనుకుంటూ నిరాశగా ఇంటికి బయలుదేరింది. త్రోవలో ఆమెకు ఒక గుండ్రని కర్ర చక్రం కనిపించింది "పోని దీనినైనా తీసుకపోతా నా మనుమడు ఆడుకుంటడు" అని ఆ చక్రాన్ని సంచితో వేసుకుని ఇంటికి తీసుకపోయింది.

గోపి ఉరుక్కుంటూ వచ్చి నాయనమ్మను చుట్టేసాడు "నాయనమ్మ డప్పు తెచ్చినవా?" అని అడిగాడు "డప్పు" మరెప్పుడైనా తెస్త... ఈ చక్రంతో ఆడుకో" అని కర్ర చక్రాన్ని తీసి గోపికి ఇచ్చింది. గోపి ఏమీ మాట్లాడకుండ కర్ర చక్రాన్ని తీసుకొని దాని దొర్లించుకుంటూ ఊరిలో తిరుగసాగాడు. చక్రంతో ఆడుకుంటూ పోతుంటే గోపికి ఒకచోట ఒక ముసలమ్మ పొయ్యి ముందరకూర్చొని ఏడవడం కనిపించింది ఆమె దగ్గరగా వెళ్ళి "అవ్వా ఏందుకేడుస్తున్నవ్? అని అడిగాడు "బాగా ఆకలిగా ఉన్నది ఇంట్లో పిండి ఉన్నది గాని పొయ్యి వెలిగించడానికి కట్టెలు లేవు రొట్టెలు ఎట్లా చేసుకోవాలనో తెలుస్తలేదు" అన్నది "అవ్వా! ఏడువకు నా దగ్గర కర్ర చక్రం ఉన్నది. దీంతో పొయ్యి వెలిగించుకొని నీ ఆకలి తీర్చుకో" అని చక్రాన్ని ఆమెకు ఇచ్చాడు.

ముసలమ్మ గోపి జాలి గుణానికి సంతోషించింది ఆ కట్టెతో పొయ్యి వెలిగించి, రొట్టెలు చేసుకున్నది. "ఒరే పిల్లగా! నువ్వెంతో మంచోడివి. నా ఆకలి తీర్చినవు నీకివ్వడానికి నా దగ్గర ఏమీ లేదు ఇదిగో ఈ రొట్టె తీసుకో? ఆకలైనప్పుడు తిను" అని ఒక రొట్టె ఇచ్చింది.

दुष्यंत और शकुंतला

Date: 19/04/2

NAME: N. Anusha
H.T. NO: 210MMD21291036
Group: B.A EHD-II

(कहानी)

शकुंतला ऋषि विश्वामित्र और स्वर्ग की अप्सरा मेनका की पुत्री थी। शकुंतला अपनी माँ की तरह ही सुन्दर थी। माता-पिता के द्वारा त्यागे जाना के बाद शकुंतला को ऋषि कण्व अपने आश्रम में ले गए और उसका पालन-पोषण किया। उसी आश्रम में पलकर शकुंतला बड़ी हुई।

एक दिन हस्तिनापुर के राजा दुष्यंत शिकार करते हुए ऋषि कण्व के आश्रम मे पहुँचे। राजा दुष्यंत आश्रम के बाहर से ही ऋषि को पुकारे, उस समय ऋषि अपने आश्रम में नही थे। शकुंतला आश्रम से बाहर आई बोली कि हे राजन। मैं ऋषि पुत्री शकुंतला हूँ। महर्षि अभी आश्रम मे नही हैं। वे तीर्थ यात्रा के लिए गए हुए हैं। मैं आपका स्वागत करती हूं। दुष्यंत आश्चर्य चकित हो गए और बोले महर्षि तो ब्रह्मचारी हैं तो आप उनकी पुत्री कैसे हुई? शकुंतला ने दुष्यंत को बताया कि मैं महर्षि की गोद ली हुई कन्या हूँ। मेरे वास्तविक माता-पिता मेनका और विश्वामित्र हैं। 'शकुंत' नाम के पक्षी ने मेरी रक्षा की थी इसलिये महर्षि ने मेरा नाम शकुंतला रखा है। शकुंतला की सुन्दरता और मधुर वाणी सुनकर राजा बहुत प्रभावित और मोहित हो चुके थे। राजा दुष्यंत ने कहा, शकुंतले तुम मुझे बहुत पसंद हो, यादि तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूं।

शकुंतला भी दुष्यंत को पसंद करने लगी और शादी के लिए हाँ कर दी। दोनों ने गंधर्व विवाह कर लिया और वन में ही रहने लगे। कुछ दिनों तक साथ रहने के बाद दुष्यंत ने शकुन्तला से कहा, मुझे अपने राज्य को सम्भालने के लिए जाना होगा। यह कहकर दुष्यंत ने शकुंतला को अपनी निशानी के रूप में एक अंगूठी दिया और अपने राज्य में वापस लौट गए। एक दिन शकुंतला के आश्रम में दुर्वासा ऋषि आये। उस समय शकुंतला राजा दुष्यंत के ख्यालों में खोई हुई थी। इसलिए शकुंतला ऋषि दुर्वासा को नहीं देख सकी और उनका आदर सत्कार नहीं कर सकी जिसके कारण क्रोधित होकर ऋषि दुर्वासा ने श्राप दे दिया कि जिसके ख्याल में तुम खोई हो वह तुम्हें ही भूल जाएगा। शकुंतला ने ऋषि से अनजाने में अपने किये गए इस

अपराध के लिए क्षमा याचना किया तब ऋषि दुर्वासा ने शकुंतला को माफ करते हुए कहा कि जब तुम अपने प्यार की निशानी 'अंगूठी' को उसे दिखाओगी तब उसकी याददाश्त वापस लौट आएगी। यह कहकर उन्होंने शकुंतला को आशीर्वाद दिया और प्रस्थान कर गये। ये घटना जब घटी थी उस समय शकुंतला गर्भवती थी। कुछ समय बाद जब ऋषि कण्व तीर्थ यात्रा से लौटे तो शकुंतला ने उन्हें अपनी पूरी कहानी बताया। कण्व ऋषि ने कहा कि "पुत्री विवाहित कन्या का पिता के घर में रहना उचित नहीं है। अब तुम्हारे पति का घर ही तुम्हारा घर है"। इतना कहकर ऋषि ने शकुंतला को अपने शिष्यों के साथ उसके पति के घर हस्तिनापुर के लिए विदा कर दिया। शकुंतला अपने पति के घर जाने

Department of ... Govt. Degree College for Women ...